‘आओ हिंद में सिंध बनायें’

पुस्तक का सार-संक्षेप

(हिंद में सिंध : क्यों, कहाँ और कैसे)

संकल्प : नारायण सरोवर-श्री झूलेलाल तीर्थधाम, कोरी क्रीक के नजदीक कच्छ-गुजरात के पास हिंद की समुद्री सीमा में पाकिस्तानी सिंध का रेप्लिका जैसा एक रिक्लेम्ड आइलैंड बना उसपर सिंधु नदी–मोहनजोदड़ो आदि का भी रेप्लिका निर्मित कर एक World class ultra modern, inspirational, richest, self reliant and biggest smart city जैसा सिंध नाम का एक नगर-राज्य (City-State) बसा हम भारतवासी भारतबोध- इतिहासबोध सहित हिंद को हर स्तर की पूर्णता सहित देश में आर्थिक नवजागरण-पुर्नउत्थान पैदा कर सकते हैं। इस निर्मित सिंध द्वारा भारतीय आज़ादी के बाद बरकरार अबतक के अनुत्तरित प्रश्न ‘सिंध का सवाल’, ‘Identity of Sindhis in India’, ‘सिंधी भाषा’ और खासकर राष्ट्रगान पर छाई अपूर्णता का सम्पूर्णता में समाधान है। In a nutshell हिंद में सिंध यानि हिंद में सिंध रूपी सिंगापुर और देश में एक साधे सब सधे का नायाब उदाहरण।

पुस्तक का मुख्य पृष्ठ

पाकिस्तानी सिंध और प्रस्तावित हिन्दुस्तानी सिंध

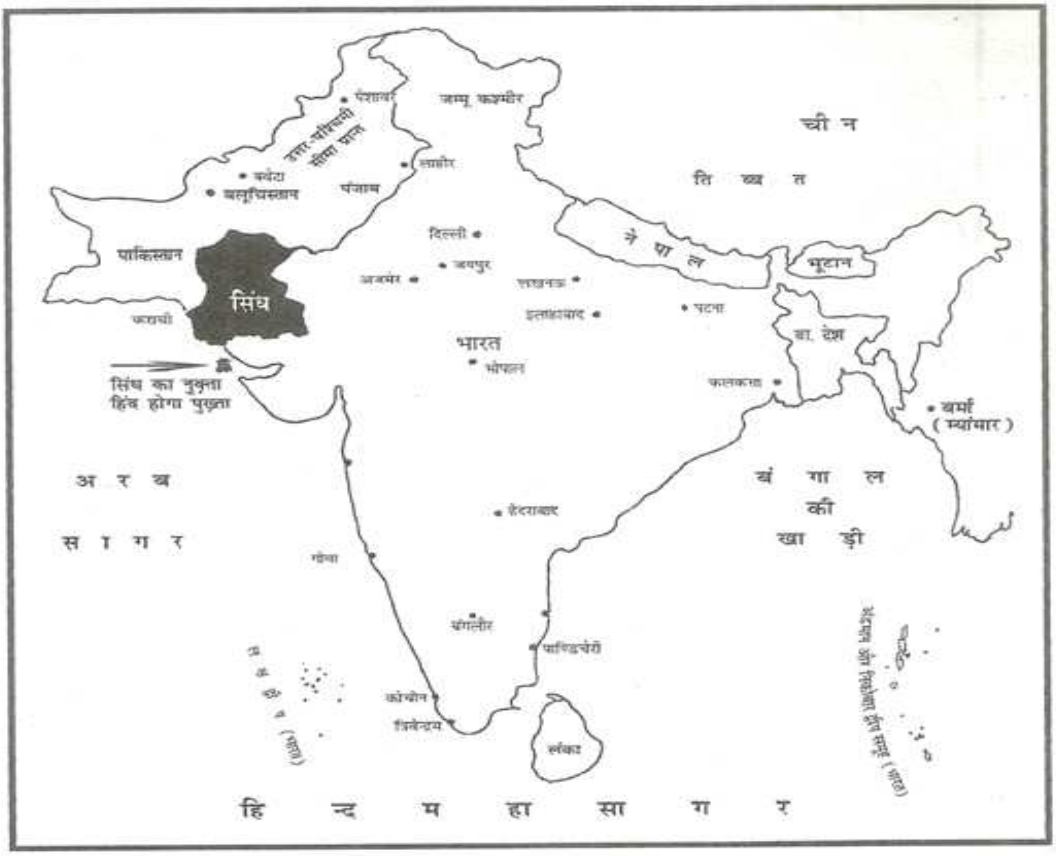

पुस्तक का सार-संक्षेप

मैं पटना, बिहार का रहने वाला हूँ। सन् 2011-12 में लिखी मेरी पुस्तक **'आओ हिंद में सिंध बनायें'** को लेकर सिंधी समाज में अखिल भारतीय स्तर पर चर्चा है। हिंद में सिंध एक विचार है। विचार दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। जब किसी विचार के जमीन पर उतरने का समय आ जाता है तो सारी परिस्थितियाँ, देश की राजनीति भी, उसके अनुरूप हो जाती है। केवल युगानुकूल, उपयुक्त एवं युक्तियुक्त साध्य का सहारा लेने में संकोच नहीं होना चाहिए। हिंद की हर तरह की संपूर्णता के लिए **'हिंद में सिंध'** एक ऐसा ही विचार है। अब इस विचार के ज़मीन पर उतरने का समय आ गया है।

पुस्तक की विषय-वस्तु को लेकर इस छोटी-सी प्रस्तुति के माध्यम से भी मैं **'हिंद में सिंध'** विचार की ज्योति को घर-घर में पहुँचाना चाहता हूँ। यदि विचार में दम होगा, विचार को कार्य में बदलना सरल होगा तो समझिए कि हिंद में सिंध बनेगा और इस कदम से हम भारतवासी कई राष्ट्रीय संकल्पों को पूरा करने के राजमार्ग पर चल देंगे। 1947 के भारत विभाजन में हिंद द्वारा सिंध को पूरी तरह खो देने के बाद यदि हम पुनः एक प्रांत या क्षेत्र के तौर पर हिंद में एक छोटा-सा ही सही पर सिंध की प्राणप्रतिष्ठा कर लें तो एक तीर से कई लक्ष्य साध लेंगे।

भारत ने 27 दिसम्बर 1911 से ही गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित एवं गाये जा रहे जन-गण-मन को आज़ादी बाद भी अपना राष्ट्रगान बनाया। मातृभूमि की पूर्ण छवि को व्यापक गुणगान

द्वारा साकार करनेवाला और राष्ट्रदर्शन के इस बेमिशाल प्रतीक को राष्ट्रगान बनाना हमारे तत्कालीन नेताओं का श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट निर्णय था। यह जानते हुए भी कि बनाये जा रहे राष्ट्रगान के ग्यारह सम्बोधनों (पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल, बंग, विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा) में से सिंध अब भारत में नहीं है, फिर भी सिंधु नदी और सिंध से हिंद के नाल (नाभि) सम्बन्ध एवं हिंद के लिए सिंध की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्ता को देखते हुए तथा लाखों-लाख सिंधी जनों के भारत आ जाने से हिंद में सिंध की भौगोलिक अनुपस्थिति को दरकिनार करते हुए भी सिंध शब्द वाले गान को राष्ट्रगान बनाया गया।

लेकिन क्या आज़ादी के 67 वर्ष बीत जाने के बाद अब भारत सरकार एवं सम्पूर्ण भारतवासियों को अपने ही उत्तम निर्णय को और अधिक सार्थक, परिपुष्ट, व्यापक, व्यावहारिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से संतुलित करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए? पुस्तक की विषयवस्तु के अनुरूप यदि हम भारतीय समुद्री सीमा के अंदर **'असांजी प्यारी सिंध'** की प्रतिकृति (रेप्लिका) के अनुरूप एक कृत्रिम द्वीप बनाकर एवं उसपर सिंध नदी तथा सिंधुघाटी सभ्यता के प्रतीक स्तंभ मोहनजोदड़ो का भी रेप्लिका निर्मित करते हुए एक छोटा-सा ही सिंध राज्य बना उसे भारतीय संघ में शामिल कर लें तो यह एक साधे सब सधे जैसा होगा। क्या-क्या सधेगा यह संक्षेप में देखें–

1. सिंध के बिना हमारा राष्ट्रगान कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी प्रकार अधूरा है–अपूर्ण है। सिंध बना राष्ट्रगान में सिंध के सांस्कृतिक पक्ष के प्रतिकात्मक उल्लेख को धरातलीय आधार देंगे। राष्ट्रगान की पूर्णता में ही एक-एक भारतीय नागरिक के राष्ट्रीयता की पूर्णता है।
2. मातृभूमि के गुणगान के भाव को पूर्णता मिलेगी। अन्यथा शाब्दिक, भौतिक तथा धरातलीय तौर पर हम कहाँ के और किस सिंध का गुणगान कर रहे हैं? क्या राष्ट्रीय गौरव और वैचारिक धरातल पर यह उचित है? क्या बौद्धिक स्तर पर यह सम्मानजनक है?
3. जब राष्ट्रगान में हम सभी भारतीय श्रद्धापूर्वक सिंध ससम्मान गा रहे हैं तो फिर हर भारतीय को राष्ट्र में भी सिंध चाहिए ही चाहिए।
4. सांसारिक और धरातलीय स्तर पर भारतमाता के आँचल विस्तार को पूर्णता मिलेगी।
5. हिंद को सिंध से जोड़ना हिंद–हिंदी-हिन्दू-हिन्दुस्तान आदि शब्दों की जड़ों को मजबूत करना होगा। इंडो-इंडस-इंडिका-इंडियन और इंडिया नाम की जड़ों को जल देना होगा।
6. जब कुछ हजार की आबादी का वेटिकन सिटी देश, छः लाख की आबादी का सिक्किम राज्य तो 5-10 लाख की आबादी का सिंध राज्य क्यों नहीं? भारत में रहने वाले 60-70 लाख सिंधी थोड़े ही नये राज्य सिंध में जायेंगे। नये राज्य में नई संभावनाओं तथा नई नौकरियों वाले लोग ही स्वेच्छा से पहले जायेंगे।
7. आज़ादी की बलिवेदी पर सर्वस्व खो देने वाले समाज के बारे में शेष देश एवं देशवासियों द्वारा सिंध निर्माण कर सिंधी समाज के प्रति आभार प्रदर्शन का यह एक श्रेष्ठ उदाहरण होगा। राष्ट्रीय एकता का यह एक नायाब उदाहरण होगा। स्टेटलेस समाज को एक स्टेट मिल जायेगा। उनकी भाषा, सभ्यता, संस्कृति, भू-राजनैतिक आकांक्षाओं आदि के विकास के सारे रास्ते खुल जायेंगे। भारत के सबसे पुराने समाज की मौलिक विशिष्टताओं का संरक्षण एवं संवर्द्धन तथा उनका सम्मान भारत का ही सम्मान होगा। वैसे भी जो सिंधी भाई-बहन पाकिस्तान से आये वो सिंध के नगरों में ही रहते थे तथा नौकरी एवं व्यवसाय-व्यापार आदि ही करते थे। भारतीय सिंध में भी वे यही कार्य करेंगे। अपनी भाषा, सभ्यता, संस्कृति एवं सामाजिक विशिष्टताओं के वृहत्त दायरे में अपनी ज़िन्दगी व्यतीत करेंगे।

8. भारत राज्यों का संघ है। किसी भी राज्य से सिंध राज्य या क्षेत्र हेतु जमीन का एक टुकड़ा माँगना और उस राज्य द्वारा उसे देना विवाद और तनाव पैदा करना-करवाना है। भारत ने अपनी आज़ादी के लिए सिंध को खोया है। अब भारत और भारत सरकार ही सिंध के लिए स्थान उपलब्ध करायेगी। भारत की समुद्री सीमा का क्षेत्र भारत सरकार का है। भारत अपनी समुद्री सीमा में ही सिंध के लिए स्थान उपलब्ध कराये। किसी राज्य से न तो सिंध के लिए कुछ माँगना है न उन्हें कुछ देना है। भारत की समुद्री सीमा के अंदर विवादरहित एवं सम्पूर्ण देश के समर्थन के बूते समुद्र में द्वीप निर्मित कर सिंध बना हम भारतीय अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सभ्यताई, शैक्षणिक, आर्थिक, व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक सामर्थ्य का विश्व प्रदर्शन कर सकेंगे। वैसे भी पूरे विश्व में कृत्रिम द्वीप पर बड़ी-बड़ी टाउनशिप्स बन रही है। हम भी एक द्वीप बना उस पर शहर बसाकर सिंध राज्य बना लें। 'सिंध बिना सूना हिंद' के स्थान पर 'सिंध संवारे हिंद' का उद्घोष करें। कच्छ के नीचे समुद्र में प्रस्तावित सिंध का 'सिंध का नुक़्ता, हिंद होगा पुख़्ता' के स्वरूप को चरितार्थ करें। हिंद की पूर्णता सहित राष्ट्रगान की सम्पूर्णता के इस अनफिनिश्ड टास्क को हम पूरा कर लें।

9. यह भारतीयों में भारत बोध तथा इतिहास बोध जगाने का एक महान अवसर होगा। भारत सहित विश्व विस्थापन समस्या के समाधान का यह एक प्रतीक होगा।

10. हिंद का यह सिंध सिंधियों को हिंद में सिंध रूपी सिंगापुर निर्मित करने का राजनैतिक अधिकार, आर्थिक कौशल को ज़मीन पर उतारने का महान अवसर तथा सिंधी Identity को जीवंत बना कर रखने का एक मंच उपलब्ध करायेगा।

पुस्तक में 'हिंद में सिंध' राज्य निर्माण को पूरी प्रक्रियाओं से गुजारते हुए दिखलाया गया है। कल्पना, विजन और स्वप्नों की संभव संभावनाओं की आधारशिला पर सिंध निर्माण की प्रस्तुति पुस्तक रूप में प्रस्तुत है। इस नवनिर्मित सिंध द्वारा हिंद के आर्थिक नवजागरण की सनसनी और हलचल पूरे देश में महसूस की जाएगी। सिंधीजनों के लिए आर्थिक गतिविधियों और उद्यमता का विस्फोट दिखलाया गया है। यह भारत का अबतक का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट होगा जो भारत सहित विश्व को प्रभावित करनेवाला होगा। पर्यटन का यह भारतीय और वैश्विक केन्द्र होगा। वाणिज्यिक सिंधी समाज के लिए यह खुल जा सिमसिम जैसा होगा।

गवर्नर की नियुक्ति हो चुकी है। राज्य विधानसभा का चुनाव तथा लोकसभा में एक प्रतिनिधि आदि का चयन होना है। सिंधी राज्य भाषा घोषित हो चुकी है। आदि-आदि .....! है तो यह परिकल्पना ही पर पहले सिंधियों और बाद में सम्पूर्ण हिंदवासियों में इसके लिए हलचल देखने को मिले तो कोई आश्चर्य नहीं। हिंद में सिंध निर्माण की पृष्ठभूमि सहित पूरी परिकल्पना को विस्तार से समझने के लिए आग्रह है पुस्तक पढ़ें। पुस्तक का हिंदी एवं अंग्रेज़ी संस्करण इंटरनेट (www.bhavishyabharti.com) पर उपलब्ध है। यदि विचार सही और संभव लगता है तो समझें कि यह विचार आपका ही है और इसके लिए आप अपनी कमर कस लें। यह हिंद में नई दृष्टि और नई उपलब्धि का आग़ाज़ होगा। इस पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद 'Come! Create Sindh in Hind' के नाम से है। youtube पर भी hindmeinsindh को देखें और सिंध-हिंद/ हिंद-सिंह की नर्मी, गर्मी और उसके अंतर्संबंधों को सझमें। अपनी राय और अपना विचार हमें hks.hindmeinsindh@gmail.com पर भेज सकते हैं। आगे प्रभु कृपा। वन्दे सिंध वन्दे। हर-हर सिंधु।

●●●●●